website: www.pawanprawah.com
पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत प्रवाह

राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में कुंभ-पर्व प्रयागराज की भूमिका

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष है

हम पूर्व अंक-5 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्स तथा कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष के विषय मे जानकारी प्राप्त की । इस अंक मे हम राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में प्रयागराज तीर्थ स्थल की भूमिका को जानने का प्रयास करेंगे ।

भाग-06

गतांक से आगे

भारत के सांस्कृतिक विकास में प्रारम्भ से ही निरन्तरता बनी रहती है। इस निरन्तरता के फलस्वरूप भारत में हिमालय से रामेश्वरम् तथा द्वारका से भारत म्यामार की सीमा तक सांस्कृतिक एकता के सूत्र सतत संचरित रहे हैं। इस सांस्कृतिक एकता के साथ-साथ क्षेत्रीय विभिन्नता सदा विद्यमान थी। आज की शब्दावली में भारत आदि काल से ही एक वृहद् सांस्कृतिक संघ बन गया था (दीक्षित रमेश दत्त, पृष्ठ-227)। प्राचीन हिन्दू सामाजिक विचारकों और मनीषियों ने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को बनाये रखने के लिए अनेक प्रकार के धार्मिक और सामाजिक प्रबन्ध किये थे जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता की एक ऐसी अन्तः सलिला अजस्रधारा बह निकली थी जिसने अनेक सहस्राब्दियों तक सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में पिरोये रखा। राष्ट्रीय एकता के इन उपायों में तीर्थों का चयन और उनकी यात्राओं का प्रबन्ध एक सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय रहा है। जहाँ राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं ने देश को एकीकृत अथवा खण्डित करने का कार्य किया है, वहीं तीर्थयात्रियों ने धार्मिक विश्वासों पर आधारित शाश्वत मूल्यों से युक्त एकता के सूत्र में पिरोया है। चतुर राजनैतिक के द्वारा भारत की एकता प्राप्त करने के प्रयासों के बहुत पहले से ही तीर्थ यात्रियों के चरणों ने अखण्ड हिन्दुस्तान की संरचना कर दी थी (प्रो0 के0वी0 रंगा स्वामी आयंगर ने 'कृत्य कल्पतर' के तीर्थ-विवेचन कांड की भूमिका में लिखा है- उद्धृत कुम्भ पर्व प्रयाग सम्पादक देवी प्रसाद दूबे 1989)। तीर्थ यात्रियों द्वारा तीर्थ यात्रा करते समय तीर्थस्थलों से सम्बन्धित महापुरुषों, ऋषियों, मुनियों एवं वीरों की स्मृतियों को जगाये रखना देश के समस्त भूभाग के प्रति लगाव का सूचक था। इस कार्य में हमारे प्राचीन ऋषि सफल भी रहे क्योंकि आज भी अनेकों वर्षों की दासताओं और सांस्कृतिक आक्रमणों एवं घात-प्रतिघातों के बीच भी उन स्थलों के लगाव से व्युत्पन्न राष्ट्रीय एकता की भावना यथावत् विद्यमान है। भारत को राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता के सूत्र में संगठित करने का सर्वाधिक श्रेय शंकराचार्य को जाता है। इन्होंने धार्मिक (Religio Culture) संस्कृति के आधार पर एकता स्थापित किया है (Subramaniam, V. 1979, Page-8)।

प्रयाग का कुम्भ मेला कई दृष्टियों से अनूठा है। यह मात्र किसी जाति का मेला नहीं है, अपितु सम्पूर्ण भारत को उसके मूल आत्मा से एक साथ देखने का प्रयास किया जाता रहा है। सम्पूर्ण सनातन धर्म को मानने वालों केअनेक सम्प्रदाय और साधुओं की विभिन्न जमातें मेले में सक्रिय हिस्सा लेती हैं और जहाँ निर्गुण ब्रह्म के उपासकों की बड़ी संख्या प्रयाग के इस मेले में एकत्र होती है, वहीं सगुण सम्प्रदाय के मतावलम्बी अपनी उपासना पद्धति के आचार्यों के साथ उपस्थित रहते हैं। इसके सम्पूर्ण वाह्याडम्बर से लगता है कि यह मात्रसाधुओं का मेला है, परन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं है। इसमें भारत का औसत गृहस्थ उसी संकल्प और मनोयोग से सम्मिलित होता है, जिस तरह साधु समाज स्वाध्याय, चिन्तन और प्रतिष्ठा की मान्यता के लिए यहाँ एकत्र होता है। मृत्यु के बाद क्या है, इसका सही उत्तर किसी के पास नहीं है फिर भी मुक्ति का आकर्षण अपार जन-सागर के अन्तः विश्वास से साकार होता है। कोई आश्चर्य नहीं कि इसीलिए देश की धमनी को पहचानते हुए महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू ने अपने-अपने अनुभवों में कहा है कि इतने अपार समूह का एक साथ इस अज्ञात आकर्षण में बाँधकर चले आना मात्र पाखण्ड नहीं हो सकता। इसके पीछे जो मूलभूत भारतीय आस्था है उसे पहचानने की सही दृष्टि होनी चाहिए। यह देश का सबसे बड़ा गौरवपूर्ण सांस्कृतिक महोत्सव है तथा देश की स्थिरता की पहचान है। देश के विभिन्न स्थलों पर रहने वाले जो इस देश की आदि आस्था सनातन धर्म में विश्वास करते हैं, वे इस अवसर पर कुछ दिनों के लिए एकजुट होकर

महाकुम्भ में सम्पूर्ण भारत की भावनात्मक एकता का दिग्दर्शन होता है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के बावजूद कुम्भ मेले की महत्ता स्वतः सिद्ध है। सामाजिक चेतना का यह संदेश कुम्भ मेला अपनी परम्परा से आज तक दे रहा है। वह राष्ट्रीय एकता, धार्मिक व सांस्कृतिक एकता की दृष्टि से महान पूँजी विनियोग, विरासत है। कुम्भ में जो कुछ व्यय होता है, उसे व्यय नहीं कहा जासकता अपितु राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं धार्मिक एकता के लिए यह एक पूँजी विनियोग है। मेला प्राचीन काल से ही भारत के सामूहिक जीवन की महत्त्वपूर्ण विशेषता रहा है। यह भारतीय संस्कृति की सामूहिक पूजा और आराधना के भाव को व्यक्त करता है। कुम्भ पर्व पर लगने वाला मेला भारत का अति विशिष्ट स्नान पर्व है।

आपसी सत्संग और विचार-विनिमय से अपने और दूसरों का ज्ञान संवर्धन करके रूढ़ियों को छोड़ने और समाज के लिए परम्पराओं को चलाये जाने का प्रयत्न करते हैं ताकि समयानुकूल होकर कल्याणकारी बनें।

महाकुम्भ में सम्पूर्ण भारत की भावनात्मक एकता का दिग्दर्शन होता है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के बावजूद कुम्भ मेले की महत्ता स्वतः सिद्ध है। सामाजिक चेतना का यह संदेश कुम्भ मेला अपनी परम्परा से आज तक दे रहा है। वह राष्ट्रीय एकता, धार्मिक व सांस्कृतिक एकता की दृष्टि से महान पूँजी विनियोग, विरासत है। कुम्भ में जो कुछ व्यय होता है, उसे व्यय नहीं कहा जासकता अपितु राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं धार्मिक एकता के लिए यह एक पूँजी विनियोग है। मेला प्राचीन काल से ही भारत के सामूहिक जीवन की महत्त्वपूर्ण विशेषता रहा है। यह भारतीय संस्कृति की सामूहिक पूजा और आराधना के भाव को व्यक्त करता है। कुम्भ पर्व पर लगने वाला मेला भारत का अति विशिष्ट स्नान पर्व है। कुम्भ मेले की तरह भारत में ऐसा कोई भी मेला नहीं है जो सम्पूर्ण हिन्दू संस्कृति को गहरे रूप में प्रभावित करता हो। इसी समय आकाश विन्यास और काल का पवित्र उद्भव और एकीकरण झलकता है। न कोई प्रचार अभियान, न निमंत्रण-पत्र, न घोषणाएँ पर फिर भी लाखों-लाख श्रद्धालु इस पर्व पर स्नान के लिए जुट जाते हैं।

कुम्भ मेला जनसाधारण को शुचिता, शुभ्रता एवं सदाचारों के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। इसके आध्यात्मिक महत्त्व को शब्दों के द्वारा दर्शाना अत्यन्त कठिन है।

कुम्भ भारतीय मनीषा की प्रखरता को अक्षुण्ण रखने का सर्वोत्तम उपाय है। युगों-युगों से भारतीय मनीषी अपने-अपने विचारों को प्रामाणिक, प्रासंगिक और उपयोगी सिद्ध करने के लिए प्रत्येक कुम्भ मेला में प्रति द्वादश वर्ष एकत्र होते रहे हैं और अपने विचारों को विद्वानों तथा जनता द्वारा ग्रहण करने का प्रयास करते रहे हैं। इस ज्ञान मेला पर सरस्वती संगम से निम्न तथ्य स्थापित हुए हैं-

हिन्दू धर्म जो वर्ण व्यवस्था में बंटा है कुम्भ के द्वारा एक विराट (सार्वभौम) संस्था का आविष्कार तथा संरक्षण करता है। इस संस्था ने हिन्दू धर्म की एकता और निरूपता को सुदृढ़ करता है। इससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है।

यहाँ प्रत्येक धर्माचार्य अपनी परम्परा को अतीत, वर्तमान तथा अनागत से जोड़ने का प्रयास करता है। न केवल नये सदस्यों को अपनी धार्मिक संस्था में दीक्षित करते हैं अपितु नये युगीन विचारों और रीतियों को भी मान्यता देते हैं। पुरातत्व कैसे नवल होता है। कैसे पुरा नव भवति। इसका प्रमाण देखना हो तो कुम्भ मेले में अवश्य जाइये। यह मेला अतीत एवं वर्तमान के समन्वय स्थापित करता है। प्रत्येक धर्माचार्य राष्ट्रहित को सर्वोपरि महत्त्व देते हैं। राष्ट्रीय एकता के आधारों को सुदृढ़ करते हैं और राष्ट्रीय संकट के निवारण के लिए न केवल धार्मिक उपाय करते हैं अपितु सशस्त्र एवं विद्रोह आदि राजनीतिक व्यय भी करते हैं। नागा साधुओं की जमात इसी संघर्ष की देन है। यह मेला राष्ट्र, राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीयता का सही बोध करता है।

कई धर्माचार्यों द्वारा अपने पंथ का निर्माण कुम्भ मेला के ही अवसर पर किया जाता है। पंथ का निर्माण स्वतंत्र अस्तित्व के लिए किया जाता है। बदलते कालक्रम में नये सम्प्रदायों के संगठन हेतु अवसर प्राप्त होता है।

इस प्रकार उपर्युक्त के अतिरिक्त धार्मिक दृष्टि के अलावा कुम्भ मेला में विभिन्न दिशाओं से भक्तों, श्रद्धालुओं, तीर्थयात्रियों, पर्यटकों का आना तथा विचारों का पारस्परिक आदान-प्रदान एवं देश की प्रतिनिधि जनता के बीच नवीन कृतियों का विज्ञापन, भावनात्मक एवं विचारात्मक एकता के सूत्र में तीर्थों (कुम्भ) की भूमिका के परिचायक हैं। भारत और भारतीयता का बोध कराता है।

कुम्भ के बारे मे अधिक जानकारी अगले अंक मे---